सारनाथ की गुप्तकालीन बौद्ध कला का ऐतिहासिक अध्ययन : एक विश्लेषण

हुक्मा राम रेगर [1]

[1] **सह आचार्य इतिहास, राजकीय महाविद्यालय जैतारण राजस्थान**

ABSTRACT

भारत के महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थलों में से सारनाथ भी एक महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल है। जो अपनी धार्मिक परम्परा और पुरातात्विक अवशेषों के कारण देश विदेश से आये तीर्थ यात्रियों, कला प्रेमियों, पुराविदों और इतिहासकारों को अपनी ओर आकर्षित करता रहता है। सारनाथ कला केन्द्र आधुनिक भारत के सर्वाधिक प्राचीन नगरों में से एक है जो वाराणसी नगर से जुड़ी हुई है एवं अलग ही पहचान का केन्द्र है, लेकिन प्राचीन काल से ही सारनाथ कला केन्द्र वाराणसी के साथ-संपृक्त रहा है। काशी, वाराणसी, अविमुक्त, आनन्दकानन और महाश्मशान नाम से यह नगरी विख्यात रही है। काश्य द्वारा बसाया जाने के कारण काशी के नाम से उद्बोधित यह नगरी शिव के त्रिशूल पर स्थित मानी गयी है। बौद्ध साहित्य में इसे सुरंधन (सुरक्षित), पुष्पावती, सुदर्शन, रम्यनगर मालिनी (मुकुलिनी) आदि नामों से सम्बोधित किया गया है। बौद्ध ग्रन्थों से यह विदित होता है कि महात्मा बुद्ध के समय तक सारनाथ घने जंगलों से घिरा हुआ था।

गुप्तकालीन शिल्प एवं वास्तु दोनों ही कलाओं का बौद्धसाहित्य में उल्लेख मिलता है’। इस काल में मथुरा, सारनाथ एवं पाटलीपुत्र मूर्तिकला की दृष्टि से प्रमुख है। यह भी देखा जा सकता है कि कौशाम्बी, सारनाथ कला केन्द्र, मथुरा कला केन्द्र के अनुकरण तथा प्रभाव से विकसित हुए थे। इसके बावजूद सारनाथ की बुद्ध प्रतिमाएँ मथुरा की प्रतिमाओं से अधिक सुन्दर, कलात्मक और विशिष्ट मानी जाती है। अतः ऐतिहासिक पृष्ठों पर सारनाथ की गुप्तकालीन बौद्ध कला का विशिष्ट रूप अंकित है।

KEYWORDS: सारनाथ , गुप्तकालीन बौद्ध कला , ऐतिहासिक अध्ययन , विश्लेषण, प्रतिमाएँ, उत्तर भारत।

आलेख प्रस्तुति

गुप्तकाल भारतीय साहित्य एवं कला के इतिहास में स्वर्ण युग के रूप में जाना जाता है और गुप्त राजाओं का शासनकाल लगभग चौथीं शती के प्रारम्भ से लेकर 6वीं शती के अन्त तक विकसित होता रहा, विशेषकर यह काल शिल्पकला के उन्नति का युग या स्वर्ण युग माना जाता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार इस कला का विकास मथुरा कला से हुआ। जिसमें कुमारस्वामी का प्रमुख मत है जिसका समर्थन फोगल ने किया है।

सारनाथ से अभी तक जितनी भी गुप्तकालीन प्रतिमाएँ देखने के लिए मिली है, उनमें ब्राम्हण मूर्तियों में शिव विष्णु, उमामहेश्वर, अग्नि सरस्वती आदि हैं तथा बौद्ध मूर्तियों में बुद्ध, बोद्धिसत्व एवं बौद्ध देवियों की मूर्तियां प्राप्त है तथा जैन मूर्तियां भी प्राप्त है। सारनाथ में जो भी गुप्तकाल में बुद्ध की प्रतिमायें बनी है, और उसमें जो प्रभामण्डल बना है, उसे गुप्तकालीन कला का दर्पण भी कह सकते हैं तथा यह प्रभामण्डल उन कलाकारों की याद दिलाता है जिन्होंने इन मूर्तियों का भाव अत्यन्त सुन्दरता से युक्त एवं रोचक ढंग से बनाया है। गुप्तकला इन मूर्तियों के सौन्दर्य एवं कुशल निर्माण के कारण ही विशेष उल्लेखनीय है। सारनाथ की कला उत्तर भारत के सभी कला केन्द्रों से भिन्न एवं सुन्दर तथा उच्च कोटि की है। सारनाथ में जैन मूर्तियों की संख्या कम है किन्तु ब्राम्हण मूर्तियाँ अधिक है। बौद्ध मूर्तियों की संख्या सर्वाधिक है। इसका यह भी कारण हो सकता है कि सारनाथ मुख्यतः बौद्ध कला केन्द्र था।

बुद्ध मूर्तिकला का निर्माण बौद्ध धर्म के इतिहास की कोई आश्चर्यजनक घटना नहीं वरन् इसे बौद्धधर्म की आराधना के मान्य प्रतीक की खोज में एक लम्बे समय के प्रयास के फलस्वरुप प्राप्त किया गया ऐसा अनुमान लगाया जाता है। गुप्तकाल के कला दृश्य को लें तो एक और प्रकार के कला दृश्य, जिन पर गांधार कला के अलंकरण स्पष्ट रूप से दिखाई देते है सर्वप्रथम भारत में दृष्टिगोचर होते हैं । जिसमें मुख्य रूप से बुद्ध के जीवन की प्रमुख घटनाओं के दृश्य दर्शनीय है, इसमें दो प्रकार के जीवन दृश्य दृष्टिगोचर होते हैं, वे हैं बुद्ध के जीवन की आठ घटनायें तथा दूसरा श्रावस्ती का चमत्कार उक्त दृश्य बड़ें ही विस्तृत रूप में दिखाए गए हैं। जो कि भारतीय संग्रहालय कलकत्ता और सारनाथ" संग्रहालय में देखा जा सकते हैं।

गुप्त काल की मथुरा एवं सारनाथ कला की अभी तक जो भी मूर्तियाँ प्राप्त हुई है उनमें खड़ी एवं बैठी हुई दोनो ही प्रकार की मूर्तियाँ है।

गुप्तकालीन बौद्ध प्रतिमा

यह मूर्तियों विशेषतः चार भिन्न मुद्राओं में प्राप्त होती हैं। प्रस्तुत उद्धरण में बुद्ध पद्मासन मुद्रा में बैठे हैं तथा उनके सिर के पीछे वृत्ताकार एवं अलंकृत प्रभामण्डल है। इस प्रभामंडल के दोनों ओर उड़ते गंधर्वों की छतें हैं। हाथ उपदेश की मुद्रा (धर्मचक्रमुद्रा) में दिखाया गया है। बुद्ध जिस सिंहासन पर बैठे हैं, उसके कैथोलिक भाग साथ में दिखाया गया है। इनमें से पाँच बुद्ध के प्रथम पाँच भद्र (पंचभद्र) एवं दो दानी मित्र हैं।

गुप्तकाल की सारनाथ काल केन्द्र अन्य कला केन्द्रों की अपेक्षा भिन्न है। इस केन्द्र की मूर्तियों में आलौकिक, शान्ति, प्रसन्न भाव देखने को मिलता है। सिर के बाल घुघरालें रूप में है

जबकि मथुरा कला में उन्हें सादे भाव में ही प्रदर्शित किया गया है। बुद्ध के पारदर्शी वस्त्र (उत्तरीय) की चुन्नट का अंकन कुषाण युगीन है। लेकिन कुषाण युग के बाद गुप्त काल में इसे विशेष रूप से उभारदार बनाकर अधिक प्रभावोत्पादक एवं सुन्दर रुप दिया गया। प्रभामण्डल पर पत्रावली पुष्प, स्वास्तिक आदि को कलात्मक रुप से सजाया गया है"। मूर्तियाँ चौकी या कमलासन पर बनी है। अन्य गुप्त कला केन्द्रों से बुद्ध मूर्ति की केवल चार मुद्राएँ ही प्राप्त है, जबकि सारनाथ से पाँच मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं। सारनाथ की गुप्तकालीन मूर्तियों के नेत्र अर्द्ध खुले हुए है जिसको देखने के बाद ऐसा लगता है कि कलाकार ने एकाग्रता एवं मनन के भाव को समुचित रूप से मूर्तियों में दिखाने का प्रयास किया है"।मुख्य रूप से बैठी हुई मूर्तियों के लिए पाँच मुद्राओं को दिखाने का प्रयास किया गया। जिसमें धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा, ध्यान मुद्रा, भूमिस्पर्श मुद्रा, वरद मुद्रा एवं अभय मुद्रा का प्रयोग किया गया। इसी प्रकार से खड़ी प्रतिमाएं मुख्यतः अभय मुद्रा और वरद मुद्रा में बनाई गयी। इसके अलावा अन्य प्रतीकों के माध्यम से भी मूर्तियों की मुद्राओं में एवं साज सज्जाओं में भी परिवर्तन किया गया।

सारनाथ की गुप्त कालीन बुद्ध मूर्तियों में सामान्य रूप से यह देखने को मिलता है, कि अभय व वरद मुद्रा का प्रयोग खड़ी प्रतिमाओं के लिए तथा धर्मचक्र, ध्यान एवं भूमिस्पर्श मुद्राओं का प्रयोग बैठी हुई प्रतिमाओं के लिए किया गया।

सारनाथ कला केन्द्र की वयस्कता एवं आत्मनिर्भरता में दर्शन एवं वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों के साथ-साथ साहित्य का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। कुछ विद्वान तो काशी जनपद के साहित्यिक उपलब्धि को ही गुप्तकालीन सारनाथ के मूर्तिकारों की चेतना का वास्तविक स्रोत मानते है। जिसके कारण अब उन्होनें मथुरा कला का अनुसरण करना बंद कर दिया था। कुषाणकाल की मूर्तिओं में जो भी स्थूलता व भारीपन था उसको सारनाथ के मूर्तिकारों ने त्याग कर अपनी मूर्तियों में कोमलता, मधुरता, अन्तःकरण की शक्ति, चिन्तन एवं मनन को भी दिखाने का प्रयास किया है। इस देश के तपस्वी योगी चिन्तनयुक्त भाव भंगिमाओं को सारनाथ के कलाकारों ने अपनाया और सारनाथ को प्रकाशमान बनाया, दिव्य समाधिस्थ, सांसारिक विषयों पर विजयी तथा आत्म एकाग्रता स्वरुप देने का प्रयास किया गया। इसवीं सन् चौथी सदी से लेकर मध्य युग तक ऐसी बुद्ध प्रतिमा की भारतीय मूर्तिकला में प्रधानता देखने को मिलता है। जिसे सारनाथ परम्परा के नाम से जाना गया। इसकी सबसे प्रमुख उपलब्धि के रूप में आसन मुद्रा में (आसनस्थ बुद्ध मूर्ति सबसे सर्वोच्च श्रेणी की मानी गयी। सारनाथ कला केन्द्र ने अपने चरमोत्कर्ष पर अपनी कुछ विशिष्ट पहचान भी स्थापित की। इसलिए इसकी एक अलग शैली के रूप में पहचान हुई। इस शैली के अन्तर्गत-

प्रतिमा एकदम स्पष्ट एवं सुसंस्कृत भावनाओं से युक्त बनाई गयी । मूर्तियों के सिर पर घुंघराले बाल एवं उष्णीस की उपस्थिति सामान्य विशेषता बनकर उभरी।

सामान्यतः मूर्तियों के दोनों कंधों पर वस्त्रावरण (संघाटि) की उपस्थित दिखाई गयी।

वस्त्रों को दिखाने के लिए पारदर्शी वस्त्रों का प्रयोग किया गया है। सम्भवतः पूर्व में विकसित होते जा रहे बारीक एवं मुलायम वस्त्रों का अंकन ।

सर के पीछे जो प्रभामण्डल होता था उसको भी सजाने के लिए विशेष अलंकरण के तहत बेल बूटों, यक्षिणियों या नारी प्रतिमाँ इत्यादि का प्रयोग किया गया।

सुकोमल ढलान युक्त भौहों के नीचे अर्द्ध खुला हुआ नेत्र मूर्तिकार ने बनाया जिसे देख कर आध्यात्मिकता को बोध होता है।

प्रतिमाओं को सामान्य रुप से किसी ऊँची जगह जैसे चबूतरे या कमल पुष्प पर दिखाया गया सिंघासन या कमलासन को भी चक्र मृग इत्यादि से सजाया गया।

निष्कर्ष

इस प्रकार सारनाथ की गुप्त काल की मूर्ति कला का विकास अत्यन्त प्रभावशाली रहा। बुद्ध को मनुष्य के रुप में दैवीय मूर्तियों की कल्पना को सारनाथ के कलाकारों ने मूर्तियों के माध्यम से एक साकार रुप दिया। गौतम बुद्ध को भगवान बुद्ध के रूप में प्रचारित करने में सारनाथ के मूर्तिकारों की अग्रणी भूमिका रही। इसलिए बुद्ध मर्ति के क्षेत्र में यहाँ के कलाकारों की उपलब्धियों को भुलाया नहीं जा सकता है। मूर्तिकारों ने बुद्ध की मूर्ति को आलौकिक स्वरुप देकर सुन्दरता, कोमलता तथा स्वच्छता का अद्वितीय रुप प्रस्तुत किया है। इस प्रकार सारनाथ में पाँचवीं शताब्दी तक मथुरा को पीछे छोड़ दिया है।

REFERENCES

1. ए0के0 कुमारस्वामी,- 'हिस्ट्री ऑफ इण्डिया एण्ड इण्डोनेशियन आर्ट।
2. क्रेमरिश स्टेला,- इण्डियन स्कल्पचर।
3. उपाध्याय वासुदेव,- प्राचीन भारतीय मूर्ति-विज्ञान'।
4. ए०के० कुमारस्वामी,- 'द ओरिजीन ऑफ द बुद्धा इमेज'।
5. जोशी, एन. पी.,- मथुरा की मूर्तिकला।
6. स्टेला क्रेमरिच,- एक्सप्लोरिंग इण्डियाज सेक्रेट आर्ट, नई दिल्ली।
7. साहनी दयाराम- ए गाइड टू बुद्धिस्ट रूइन्स एट सारनाथ।
8. कुमारस्वामी,- हिस्ट्री ऑफ इण्डिया एण्ड इण्डोनेसियन आर्ट।
9. स्मिथ, बी.- 'हिस्ट्री ऑफ फाइन आर्ट इण्डिया एण्ड सिलोन।
10. फोगल,- बुद्धिस्ट स्कल्पचर्स फ्राम सारनाथ।